अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े-बखत।
महामत रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत।। ८४ ।।

परमधाम की जमीन का नूर बेशुमार है और वहां के रहने वाले बड़े भाग्यशाली हैं। श्री महामतिजी कहते हैं रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, क्योंकि इनका ठिकाना श्री राजजी के चरणों में ही है।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ५२७ ॥

अर्स अंदर निसबत चरन

अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

रूहों के दिल में जो इच्छा होती है, रंग महल के अन्दर श्री राजजी महाराज सभी पूरी करके सुख देते हैं, इसलिए जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरण क्यों छोड़ेंगी?

अर्स अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसों दिस लरत।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

मूल-मिलावे में जहां रूहें बैठी हैं, दसों दिशाओं में नूर की तरंगें फैल रही हैं। रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें बारे हजार बैठाएके, हक हांसी को खेलावत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

मूल-मिलावा में बारह हजार रूहों को बिठाकर श्री राजजी महाराज हंसने के वास्ते खेल दिखा रहे हैं, तो रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके कदम क्यों छोड़ेंगी?

लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्त्र जित।
सो क्यों छोड़ें रूहें कदमको, जाकी असल हक निसबत।। ४ ।।

दूसरी भोम में खड़ोकली में स्नान के सुख और बारह हजार मन्दिरों में भुलवनी के खेल के सुख हैं, तो श्री राजजी की अंगना उनके चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ५ ।।

रूहें तीसरी भोम में चढ़कर बड़े झरोखे में आती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें?

कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत।
ए आवें मुजरे इन सरूपके, जाकी असल हक निसबत।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वह श्री राजजी से अपनी निसबत जानकर नित्य दर्शन को आते हैं।

नूर मकानसें आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ७ ।।

जब श्री राजजी महाराज तीसरी भोम की पड़साल पर विराजते हैं तो अक्षरब्रह्म अपने धाम से उनके दर्शन करने के लिए हर रोज आते हैं, तो रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों की याद को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

हक बैठें पौढें भोम तीसरी, आगू झरोखों आरोगत।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदमको, जाकी असल हक निसबत।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज तीसरी भोम में बैठते हैं, आराम करते हैं और झरोखों के आगे आरोगते हैं, तो यह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें अर्स अजीमकी, भोम चौथी देखें निरत।
सो हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ९ ।।

रूहें परमधाम की चौथी भोम में नृत्य देखती हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज के चरणों को उनकी अंगनाएं क्यों छोड़ें?

रूहें अर्स अजीमकी, पांचमी भोम पौढ़त।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १० ।।

रूहें परमधाम की पांचवीं भोम में शयन करती हैं। इस सुख को रूहें संसार में भी कैसे छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें अर्स अजीमकी, भोम छठी कई जुगत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ११ ।।

रूहें परमधाम की छठी भोम की कई तरह की शोभा को देखती हैं, इसलिए श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं? जो उनकी अंगना हैं।

रूहें अर्स भोम सातमी, जो छपर-खटों हींचत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १२ ।।

रूहें परमधाम की सातवीं भोम में खट छप्पर के हिंडोलों में झूलती हैं, इसलिए संसार में श्री राजजी के चरण को कैसे छोड़ें? वह उनकी अंगना हैं।

ए अर्स भोम आठमी, साम सामी हिंडोलें खटकत।
ए रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १३ ।।

रूहें परमधाम की आठवीं भोम में आमने-सामने हिंडोलों में झूलती हैं जो आवाज करते हैं, इसलिए रूहें श्री राजजी के चरणों को नहीं छोड़ेंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

अर्स रूहें सुख नौमी भोमें, सुख सिंघासन समस्त।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १४ ।।

रूहें नवीं भोम में सिंहासन के सुख हर हांस में लेती हैं, तो संसार में उन चरणों को कैसे छोड़ें, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें रेहेवें अर्स में, जो सुख झरोखों भोगवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १५ ।।

रूहें परमधाम के झरोखों के सुख लेती हैं, तो संसार में श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

हक हादी रूहें सुख अर्स चांदनी, अर्स अंबर जोत होवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १६ ।।

रंग महल की चांदनी के ऊपर श्री राजश्यामाजी, रूहें बैठती हैं, जिनका तेज आकाश में फैलता है। अब वह रूहें श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत।
सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरण पकड़कर दसों भोम के सुख लेती हैं। संसार में श्री राजजी के चरण बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत।
हांसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत।। १८ ।।

अब जागनी का समय नजदीक आ गया है। पीछे तो सभी उठ बैठेंगे। जो भूलेगी उस पर हंसी होगी, क्योंकि श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें हुकम ले दौड़ियो, मूल तन अर्समें उठत।
हक हंससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत।। १९ ।।

हे रूहो! अब श्री राजजी महाराज के हुकम से जागृत होकर दौड़ो, जिससे तुम्हारी परआतम परमधाम में जागृत हो जाए। ऐसी निसबत को भूलने से श्री राजजी महाराज तुम्हारे पर हंसेंगे, क्योंकि तुम उनकी अंगना हो।

आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत।
जो सुपने कदम न भूलिए, हंसिए हकसों ले निसबत।। २० ।।

हे मोमिनो! जागने का समय नजदीक आ गया है, इसलिए श्री राजजी की नसीहत को क्यों भूलें? सपने में भी श्री राजजी के चरणों को न भूलें, तब हम श्री राजजी की अंगना हैं। खेल समाप्ति पर श्री राजजी के साथ मिलकर हम हंसेंगे।

लाहा लीजे दोनों ठौरका, सुनो मोमिनों कहे महामत।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, अगर हमने अपनी निसबत पहचान कर सपने में श्री राजजी के चरण न छोड़े तो खेल में और परमधाम में दोनों ठिकानों का सुख मिलेगा।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ५४८ ।।

श्री राजजी की इजार

असल इजार एक पाचकी, एकै रस सब ए।
कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके।। १ ।।

श्री राजजी की इजार हरे रंग की है। पूरी इजार में एक ही शोभा है। जिसमें बेल, पत्ते, फूल, बूटियां कई रंग की बनी हैं।

Nijanand App